जंगल की रानी

कांस्टेंटाईन

बहुत पहले भारत में, कृष्ण नाम के एक छोटे लड़के ने अपने दरवाजे पर एक बाघ का बच्चा पाया. उसने उसे अपने घर में ही पाला, और फिर दोनों पक्के दोस्त बन गए.

लेकिन बाद में रानी एक आलीशान बाघिन बन गई, जो आजादी के लिए बेचैन थी. यह जानते हुए कि वो अपने पालतू जानवर को अब और नहीं रख सकता था कृष्ण, रानी को महल के बगीचे में रहने के लिए ले गया. फिर भी बाघिन अपनी आजादी के लिए तरस रही थी. एक दिन कुछ अप्रत्याशित हुआ - और रानी आखिर में जंगल की रानी बन गई!

बहुत पहले भारत में कृष्ण नाम का एक छोटा लड़का रहता था.

वो अपने पिता और माता और कई नौकरों के साथ एक बड़े पुराने घर में रहता था. घर का नाम "जेंटल हाउस" था और वो एक नदी के किनारे पर, एक पहाड़ी पर अकेला और ऊंचा बसा था.
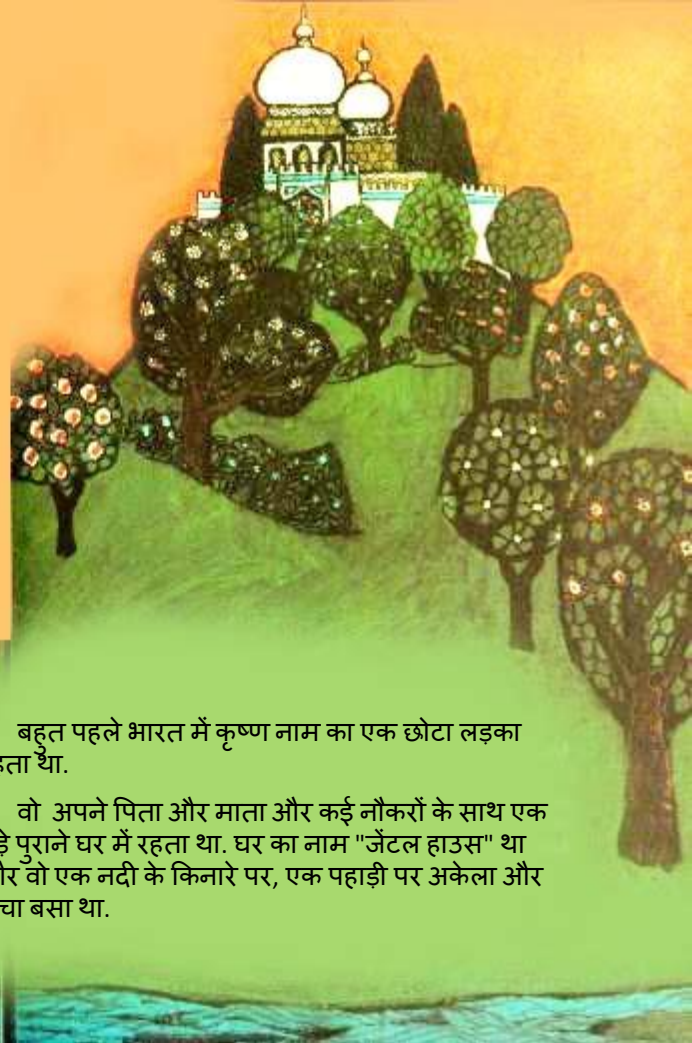
"जेंटल हाउस" के चारों ओर घास, एक कालीन जैसे वहां के बगीचे पर फ़ैली थी. यहाँ कृष्ण अपने अन्य दोस्तों के साथ खेलता था. छोटे-छोटे जीव-जंतु "जेंटल हाउस" के आसपास अपने घर बनाते थे.

कृष्ण को खौफनाक, रेंगने वाले कैटरपिलर, मखमली गुनगुनाती मधुमक्खियां आदि बहुत पसंद थीं. लेकिन किसी और चीज से ज्यादा, वो एक जंगल के असली जानवर को अपना दोस्त बनाना चाहता था.

गर्मियों में सुबह के समय जब सूरज नीचे जंगल के ऊपर सोने की बाली की तरह लटका होता था, तब कृष्ण जंगली और मुक्त घूमने वाले जीवों की आवाजें सुनता था. और जब सूरज आसमान में ऊंचा होता तब कृष्ण पहाड़ी से नीचे उतरकर जंगल में जाने और एक दोस्त खोजने की योजना बनाता था.

लेकिन वहां जाने के लिए कृष्ण को हमेशा अपने पिता, मां और जेंटल हाउस के नौकरों की अनुमति लेनी पड़ती थी.

"रुको," उसकी माँ कहती थीं. "रुको," उसके पिता कहते थे.

"रुको," जेंटल हाउस के नौकर कहते थे.

"जब तक तुम बड़े नहीं हो जाते तब तक तुम्हें प्रतीक्षा करनी होगी."
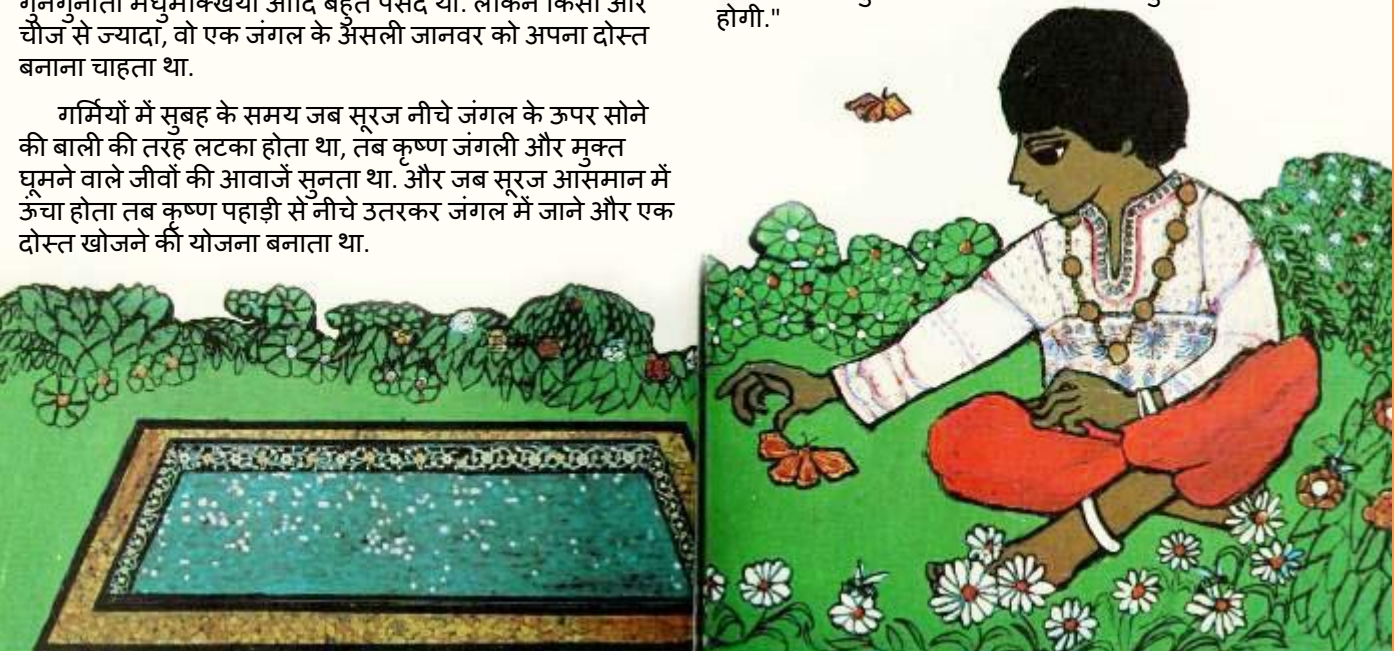
लेकिन अब वो इंतजार करते-करते थक गया था. और इसलिए वो सूरज ढलने के तुरंत बाद जेंटल हाउस में सोने के लिए चला गया.

रात में कृष्ण की आँख खुली. फिर वो खिड़की के पास गया. वहां अँधेरे में उसे एक बूढ़ा सन्यासी दिखाई दिया, जो एक छोटी सी गठरी लिए हुए था. जेंटल हाउस के दरवाजे की ओर बढ़ रहा सन्यासी थका हुआ और धूल-धूसरित लग रहा था.

उसने कोई घंटी नहीं बजाई. उसने एक शब्द नहीं कहा. उसने उस गठरी को दरवाजे पर रख दिया और फिर अंधेरे में गायब हो गया.

दीपक की रोशनी में कृष्ण ने गठरी में कुछ हिलते हुए देखा. उसने धूल भरी चादर में से किसी को फुसफुसाते हुए भी सुना.

जल्दी से कृष्ण जेंटल हाउस में दौड़कर गया और उसने अपने माता-पिता और नौकरों को जगाया.

"जल्दी आओ और देखो कि वो साधु दरवाजे की सीढ़ी पर क्या छोड़ गया है," उसने उनसे विनती की. "कृपया जल्दी आओ."

जल्द ही शाम के दिए फिर से जलाए गए. जेंटल हाउस के अंदर की रोशनी सीढ़ियों पर रखी उस गठरी पर पड़ रही थी.
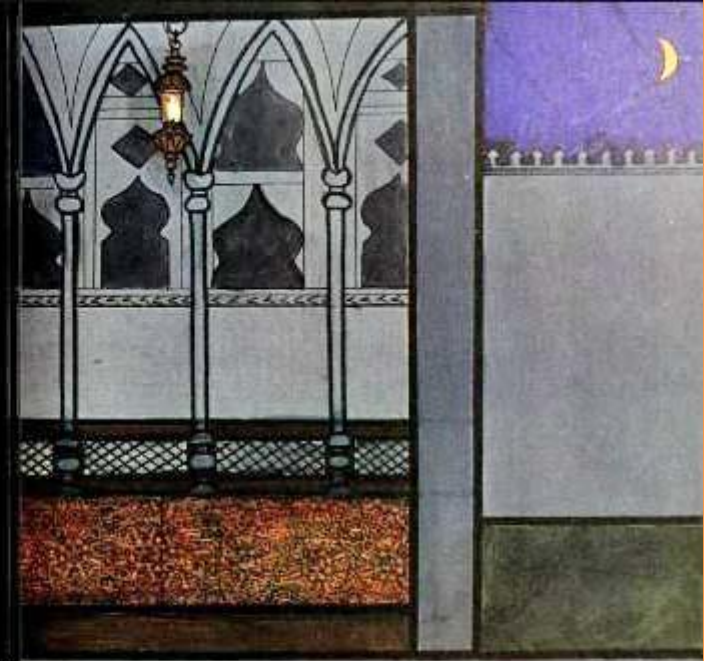
कृष्ण झुका और उसने धूल से सनी गठरी खोली. उसमें एक छोटा बाघ का बच्चा था और वो रेंगने की कोशिश कर रहा था.

"वो एक बहुत छोटा बच्चा है," कृष्ण की माँ ने समझाया. "उसकी आँखें अभी भी बंद हैं और उसके चेहरे पर अभी भी बहुत झुर्रियां हैं."

"क्या मैं इसे रख सकता हूँ?" कृष्ण ने विनती की.

"हाँ," उसकी माँ ने कहा.

"हाँ," उसके पिता ने कहा.

"हाँ," जेंटल हाउस के नौकरों ने कहा.

"तुम इसे तब तक रख सकते हो जब तक वो बड़ा न हो जाए."

बाघ के बच्चे के जेंटल हाउस में जीवन खुशी और आश्चर्य से भरा था. धीरे-धीरे वो बड़ा और बड़ा होता गया. कृष्ण का जीवन भी आनंद और आश्चर्य से भर गया. हर दिन उसके लिए कुछ नया लेकर आता था, कुछ अद्भुत.

एक दिन नन्हे बाघ की आंखें पूरी तरह खुल गईं. बाघ के बच्चे ने पहली बार कृष्ण और जेंटल हाउस की पर्दों और कालीनों से घिरी दुनिया को देखा. वहां की दुनिया शांत चीजों से भरी थी.
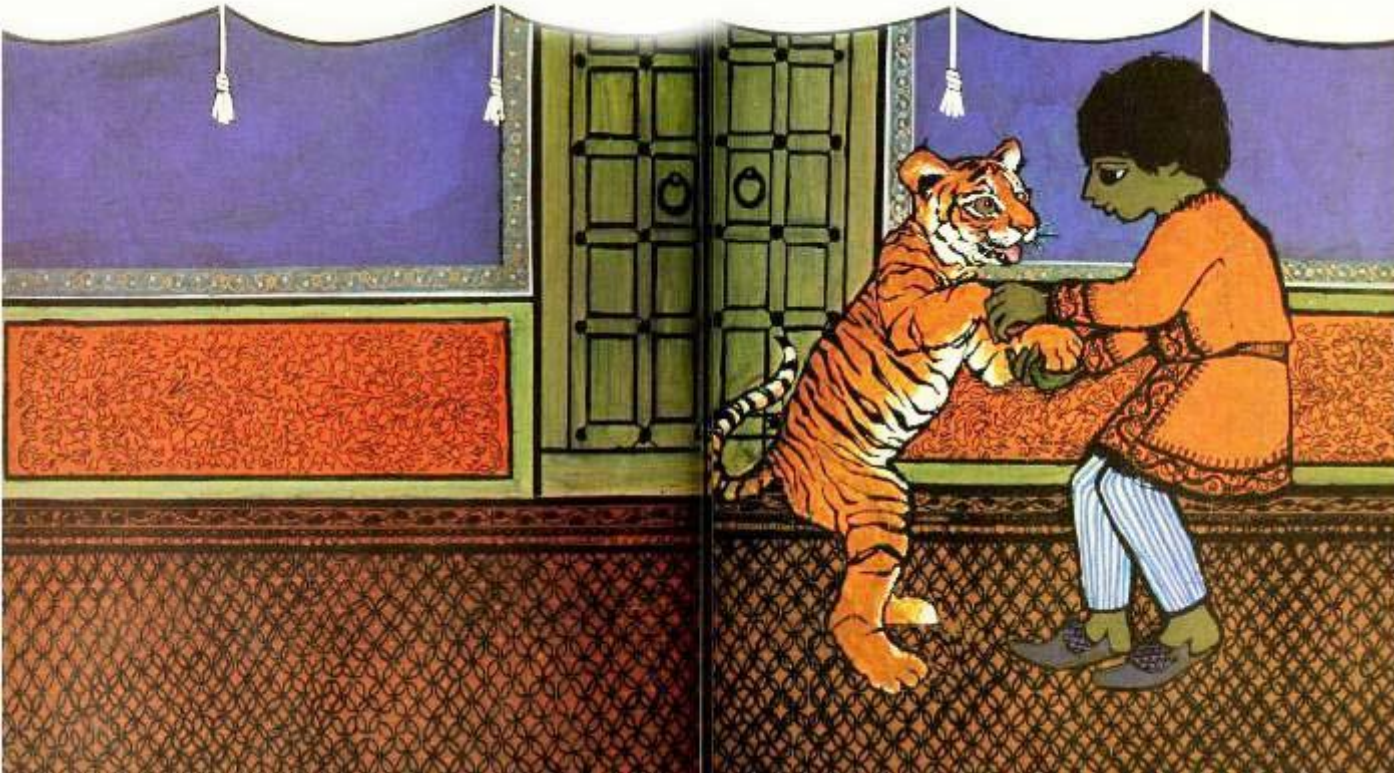
उस सुबह कृष्ण, बाघ के बच्चे को बगीचा दिखाने के लिए ले गया. गर्म हवा में से मिट्टी की मीठी सुगंध आ रही थी.

नन्हे शावक के लिए वो एक अजीब नजारा था, अजीब गंध थी. और वो कृष्ण के लिए भी कुछ अजीब था. एक साधु तालाब से पानी से कुछ इकट्ठा कर रहा था.

साधु मंदिर की ओर जा रहा था और भेंट के लिए कुछ कमल के फूल चाहता था. उसने अपनी छड़ी ज़मीन पर रखी और फिर वो नन्हें बाघ के सिर को सहलाने के लिए झुका.

"देखो वो कितनी सुंदर है," वो धीरे से फुसफुसाया. "ओह, बहुत सुंदर! मेरी जंगल की रानी!"

फिर उसने कृष्ण की ओर देखा और कहा.
"वो रानी कहलाएगी, रानी.
और वो जंगल की रानी बनेगी!"
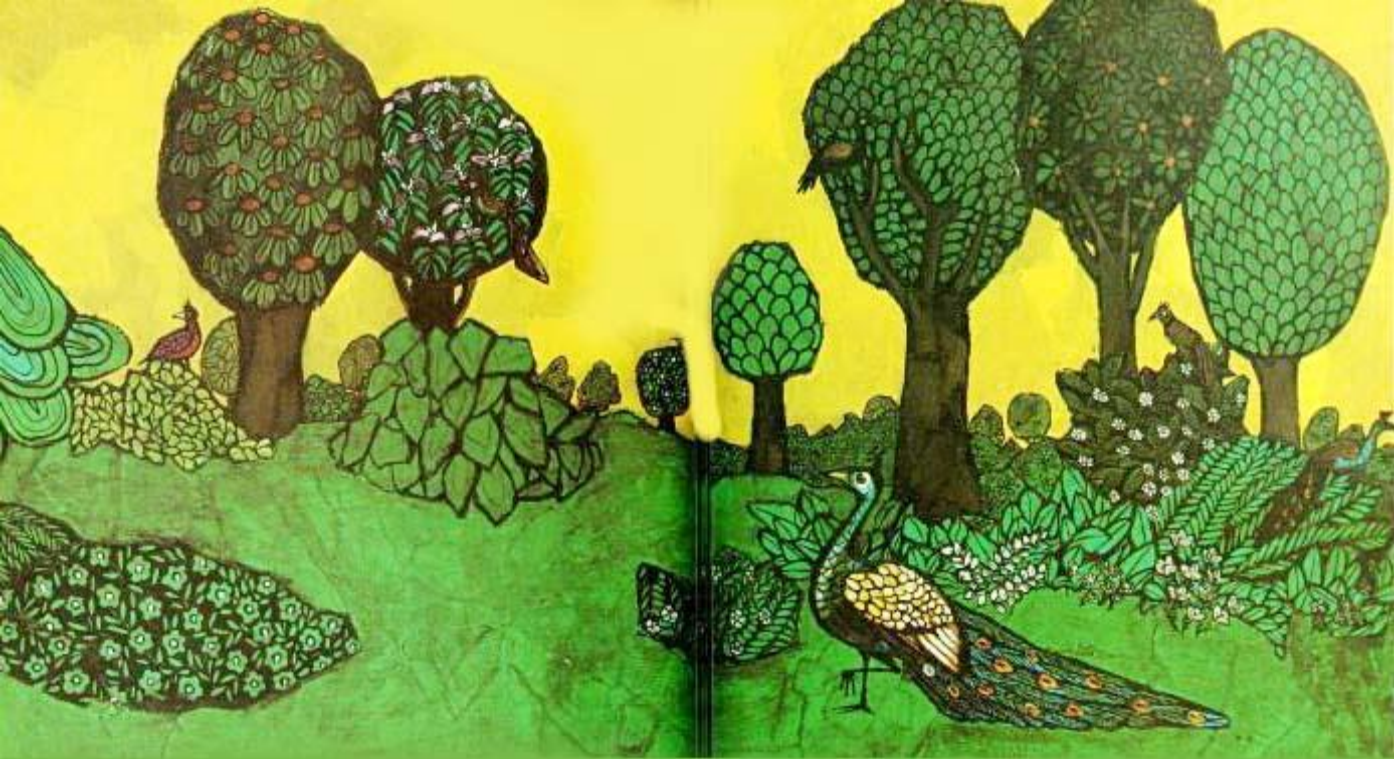
दूर से मंदिर की घंटियां बज रही थीं. अचानक हवा में एक अजीब संगीत भर गया. जंगल के पक्षी गाने लगे, मधुमक्खियां गुनगुनाने लगीं.

ऊँचे पेड़ों के ऊपर गर्म हवाएँ फुसफुसा रही थीं और उनसे साधु की कोमल आवाज़ गूँजती थी.

"वो जंगल की रानी बनेगी."

गर्मियां बीत गईं और गर्म, धूप वाले दिनों के बाद बारिश का मौसम आया. जंगली हवाओं ने मिट्टी को चारों ओर उड़ाया और सभी जीवित चीजों को अपनी आगोश में लिया.

बरसात के इन लंबे दिनों के दौरान, रानी और कृष्ण एक साथ घर के अंदर ही रहे. उन्होंने नरम कालीनों पर चलना सीखा. वे पर्दे के पीछे लुका-छिपी खेलते थे, और जेंटल हाउस के बनावटी जंगल में एक-दूसरे का पीछा करते थे.

कभी रानी, रेशमी तकियों पर अपने पंजों को फैला लेती थी. कभी-कभी वो गुर्राती थी और तब जेंटल हाउस में जंगल की आवाजें गूँजती थीं. और कभी-कभी वो नीचे के जंगल को देखने के लिए खिड़की में से कूद जाती थी. उसने बारिश में हरे बगीचे का आनंद भी लिया.
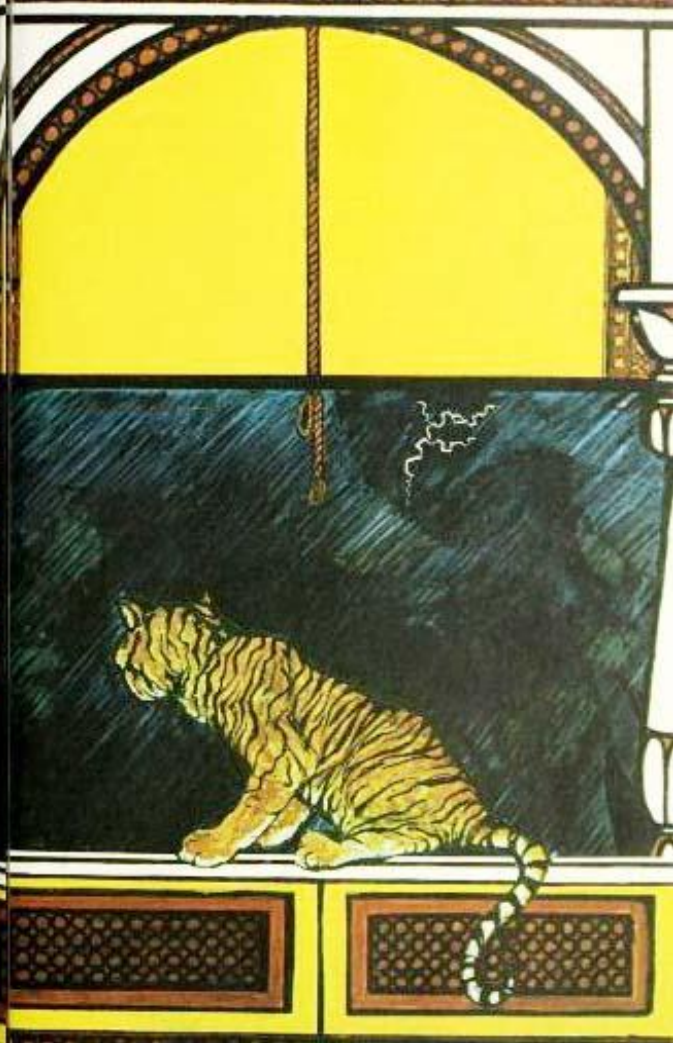
एक सुबह, जब कृष्ण और रानी एक साथ अपने बिस्तर में लेटे हुए थे, सूरज की किरणें खिड़कियों से झाँक रही थीं. बाहर, कबूतर कू-कू कर रहे थे. माली की कैंची से पौधों को कतरने की आवाज़ आ रही थी.

ऊँचे-ऊँचे पेड़ों से धीरे-धीरे हवा बह रही थी और बारिश गायब हो गई थी. और एक बार फिर हवा धूप से जगमगा उठी. जैसे ही कृष्ण और रानी जागे और उन्होंने सूर्य को देखा, वे एक साथ बाहर की ओर दौड़े. उन्होंने जेंटल हाउस के पास से बहती शक्तिशाली नदी को देखा.

और फिर नीचे के जंगल की आवाजें आईं. उफनती नदी की गर्जना भी ज़बरदस्त थी. क्या जंगल की आवाज़ें उसे बुला रही थीं?

रानी ने वो आवाजें सुनीं और वो ध्यान से उन्हें सुनने के लिए खड़ी हो गई. फिर वो पहाड़ी पर ऊंचे जेंटल हाउस तक आने वाली जंगल आवाज़ों का जवाब भी देने लगी.
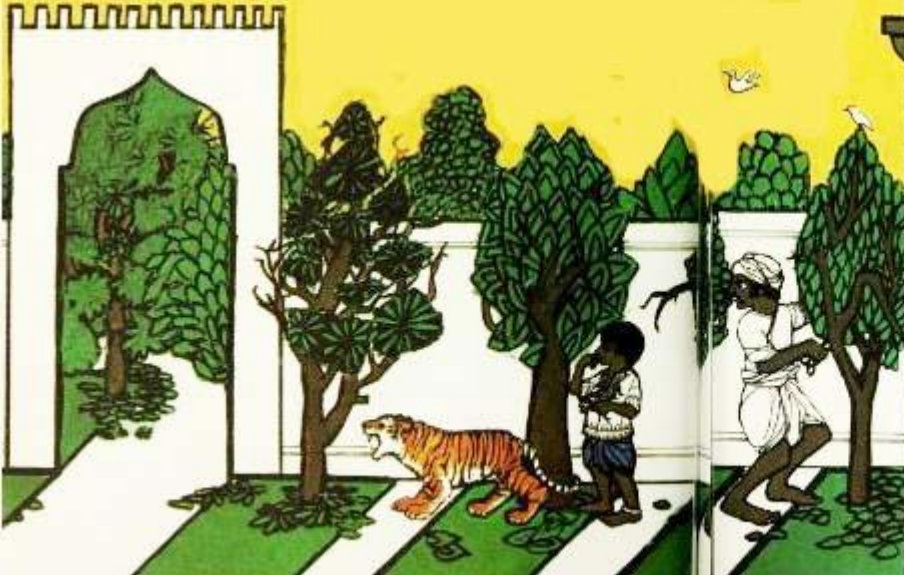
कृष्ण को आश्चर्य हुआ. उसकी माँ ने सोचा

उसके पिता ने भी सोचा

नौकरों को काफी आश्चर्य हुआ.

क्या रानी के जंगल में लौटने का समय आ गया था?
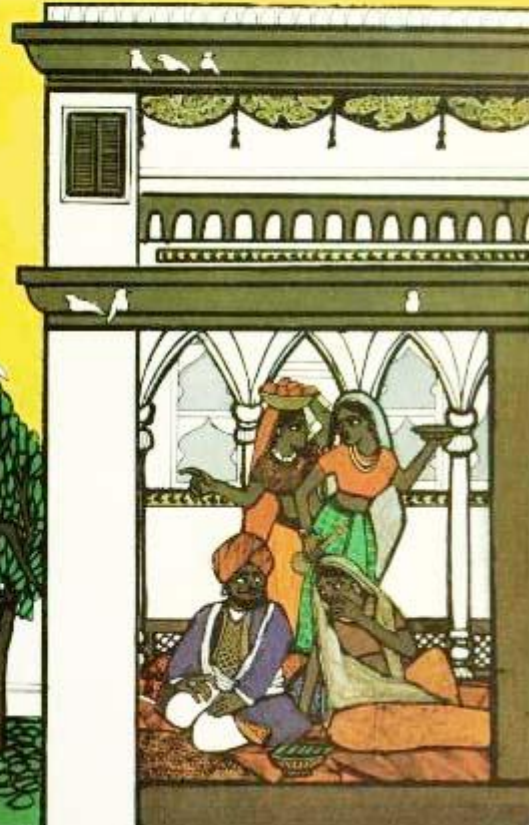
समय बीतता गया. एक दिन बारिश में कृष्ण दरवाजे पर रानी के साथ खेल रहा था. गोधूलि का समय था. बरामदे में मिट्टी के तेल का दीपक नहीं जल रहा था. पूरे बगीचे में जुगनू टिमटिमा रहे थे कि अचानक वही साधु प्रकट हो गया. उसके पास अपनी छड़ी और कुछ फूल थे. वो जेंटल हाउस की ओर बढ़ा जहाँ कृष्ण और रानी खेलते थे.

"रानी अब बहुत बड़ी हो रही है," साधु ने कहा. "यह घर अब उसके लिए छोटा है. अब उसे उस महल में जाकर रहना चाहिए जहां से नदी गुजरती है."
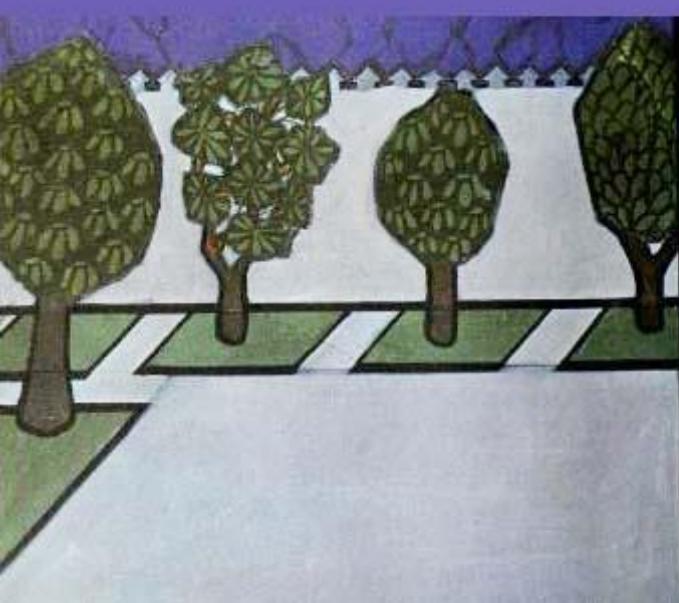
फिर अँधेरा हो गया और सन्यासी चला गया और कृष्ण दरवाजे पर बैठ गया और उदास होकर रानी को देखने लगा. रानी न तो गुर्राई और न ही कूदी. वो चुपचाप दरवाजे पर लेट गई और कृष्ण उसकी बगल में बैठ गया. वो उसे गले लगाने के लिए नीचे झुका और उसने उसके गाल को सहलाया.

कुछ ही समय बाद कृष्ण के माता-पिता और जेंटल हाउस के नौकर रानी को, नदी के किनारे राजा के महल में ले गए. वो बगीचों से घिरा एक प्यारा सा महल था वहां के बगीचे, बड़े और चौड़े जंगलों जैसे थे.

कृष्ण ने राजा के महल और उसके चारों ओर फैले बड़े बगीचों के बारे में कई कहानियाँ सुनी थीं. उसने सुना था कि राजा अपने घर के जंगल में रहने के लिए एक बड़ा जंगली जानवर चाहता था.

और फिर रानी नदी के किनारे राजा महल में रहने के लिए चली गई. यहाँ वो रोती और चिल्लाती थी जैसे वो नदी के किनारे असली जंगल में रहती हो. यहां उसने घर की दीवारों और कालीनों से मुक्त दुनिया में खुद की देखभाल करने के तरीके भी सीखे.

दिन के बाद दिन बीतते गए. बहुत गर्मी थी. तभी आकाश में एक बादल दिखाई दिया. लेकिन एक दिन हवा तेज हो गई. उससे घास में एक फुसफुसाहट की आवाज हुई, और उसके कारण धूल के छोटे-छोटे कणों ने जेंटल हाउस के चारों ओर चक्कर लगाए.

उस रात आसमान में काले बादल छा गए. फिर बिजली चमकी और उसने तेज़ आने वाली बारिश की चेतावनी दी.

अब गर्मी बीत चुकी थी. फिर से जंगली हवाएँ चलीं, और जेंटल हाउस के चारों ओर गड़गड़ाहट हुई. आसमान में बिजली चमकी और फिर बारिश की छींटे गिरने लगीं. फिर दिन-रात बारिश होने लगी. इतनी तेज, इतनी लंबी बारिश पहले कभी नहीं हुई थी.

कई दिनों तक कृष्ण जेंटल हाउस के अंदर रहा जहाँ सब कुछ शांत और एकाकी था. कभी-कभी वो अपनी बांसुरी बजाता था. कभी-कभी वो हवा और बारिश की आवाजें सुनता था.

लेकिन जब वो बारिश से सराबोर जंगल को देखता तो वो रानी के बारे में अचरज करता था. वो उसके बारे में महल के बगीचों के बारे में भी सोचता था जिसके पास से एक तूफानी नदी बहती थी.
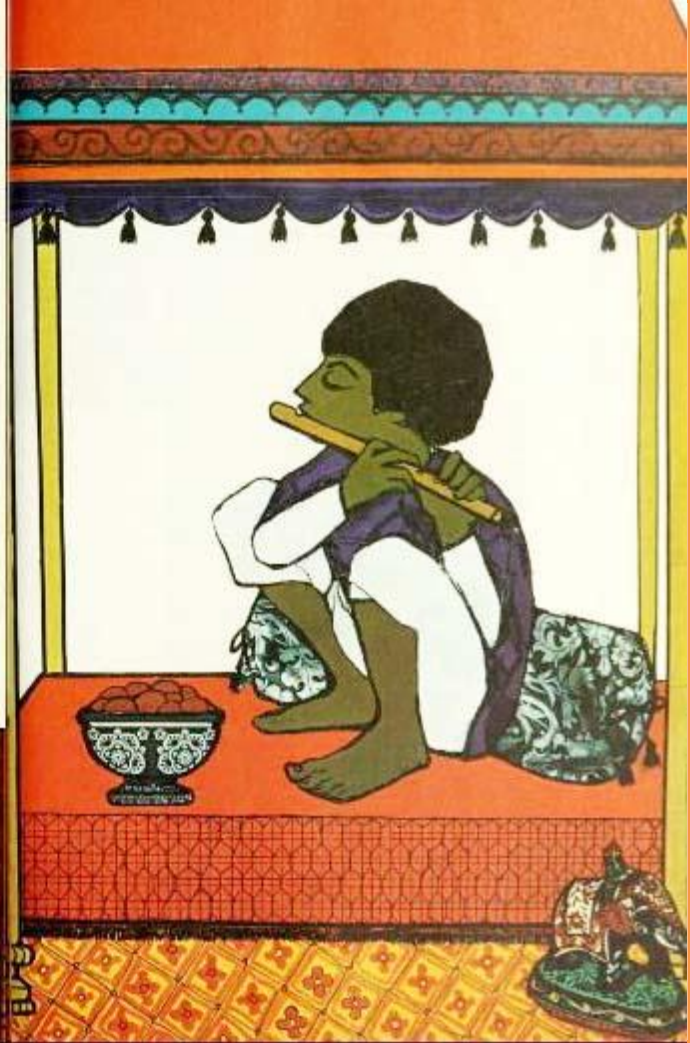
फिर एक दिन सुबह होने से पहले ही घने अंधेरे में, तूफान खत्म हो गया. बारिश ख़त्म हो गई और हवाएँ शांत हो गईं. धूप के दिनों की याद दिलाने के लिए केवल नरम, कोमल हवा चल रही थी.

जब कृष्ण उस सुबह उठा तो आकाश में सूरज चमक रहा था और शांत हवा में पानी की तेज आवाज आ रही थी.

बारिश के पाने से भरे बगीचे में कृष्ण चुपचाप खड़ा रहा. जंगली, तूफानी भूमि पर अब एक महान शांति छा गई थी. घास, हवा में लहरा रही थी और साफ बादल आसमान में छाए थे.

लेकिन जब कृष्ण ने नीचे के जंगल को देखा, तो वहां बाढ़ वाली नदी उफनकर तेज़ी से बह रही थी.

नदी उफान पर थी. उसने इतनी बाढ़ पहले कभी नहीं देखी थी. वो जंगल से लेकर आकाश के छोर तक लंबी चांदनी की तरह फैली हुई थी. नदी के किनारे के सभी पेड़ पानी में झुक गए थे. घुमावदार ज्वार के साथ बहुत सारे कमल के फूल पानी की भंवर में तैर रहे थे. तभी कृष्ण ने नदी के बीच में रानी को देखा.

उसका दिल एक पल के लिए रुक गया और फिर वो चिल्लाया, "रानी! रानी!" शक्तिशाली नदी के गरजन में उसकी आवाज एक फीकी गूँज जैसी थी.

रानी पानी के ऊपर अपना सिर ऊंचा करके कमल के फूलों के बीच तैर रही थी. सूरज की रोशनी में कृष्ण ने उसका नेक चेहरा देखा. रानी की नज़र पहाड़ी पर ऊँचे जेंटल हाउस की ओर टिकी थी.

अकेले बगीचे में खड़े कृष्ण ने देखा और सोचा.

कृष्ण ने सोचा, "रानी बाढ़ के पानी के साथ, महल की दीवारों से उठकर जंगल की उफनती नदी में आई होगी."
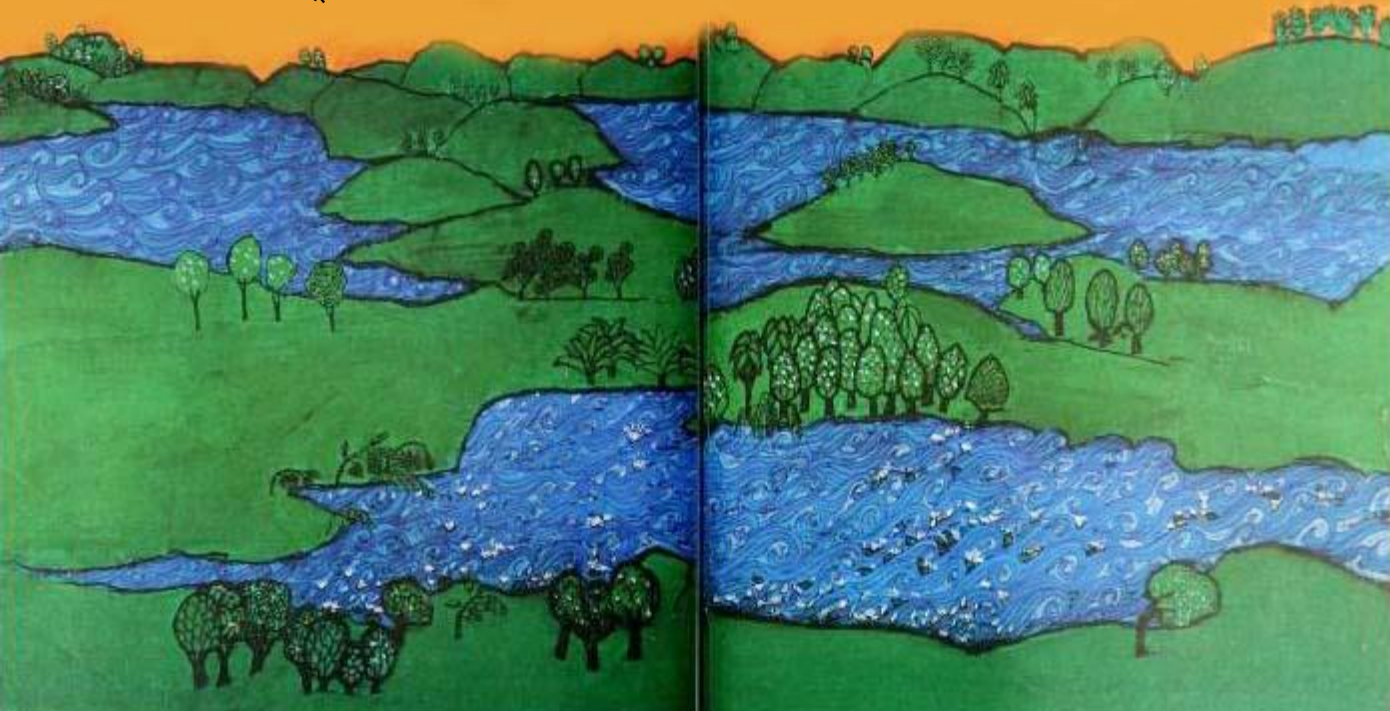
रानी, कमल के फूलों के साथ तैरती रही. उसने जेंटल हाउस को पार किया और फिर उसने जंगल की हरी-भरी दुनिया में प्रवेश किया. जैसे ही रानी वहां से गुजरी, गर्म हवाओं में कुछ समय पहले की एक प्रतिध्वनि सुनाई दी.
"देखो वो कितनी सुंदर है,
बहुत सुंदर है! मेरी जंगल की रानी!"